पाठ्यक्रम की आवश्यकता (NEED OF CURRICULUM)

शिक्षक, विद्यार्थी तथा विद्यालयीन पाठ्यक्रम परस्पर संयोजित तथा अंतर्सम्बन्धित का कार्य विद्यार्थी की वृद्धि तथा विकास है। जहाँ वह यह कार्य करता है, उस स्थान को विद्यालय कहा1 जाता है। शिक्षक को क्या तथा कैसे करना चाहिए, उसे यह सब कुछ विद्यालयीन पाठ्यक्रम के द्वाराज्ञात होता है। पाठ्यक्रम के अभाव में शिक्षक तथा विद्यार्थी कार्य नहीं कर सकते। शिक्षा प्रक्रिया के द्वारा विद्यार्थी की वृद्धि तथा विकास होता है। विद्यार्थी को शिक्षण प्रदान करने की प्रक्रिया के द्वारा शिक्षक की भी वृद्धि और विकास होता है। इन दो मानव संसाधनों शिक्षक तथा विद्यार्थी की वृद्धि और विकास के लिए हमें इस प्रकार के पाठ्यक्रम की आवश्यक होती है जो वृद्धिशील तथा विकासशील हो। एक निश्चित और स्थायी प्रकार का पाठ्यक्रम इस उद्देश्य को कभी पूर्ण नहीं कर सकता। अतः हमें वृद्धिशील तथा विकासशील पाठ्यक्रम की आवश्यकता है जो शिक्षक तथा विद्यार्थी को सफलतापूर्वक कार्य करने के लिए उपलब्ध हो।

पाठ्यक्रम की आवश्यकता निम्न प्रकार है

1. **शिक्षा में गुणवत्ता लाने हेतु-(** To bring Quality Education)-हम जानते है कि शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्ता बने रहना नितान्त आवश्यक होता है। ज्ञान जब अत्यधिक प्राचीन हो जाता है तब अनेको रूदियों को तो जन्म देता ही है साथ ही साथ बालकों की भी शनैः शनैः उसमें रुचि समाप्त होने लगती है। अतः आवश्यक है ज्ञान तार्किक हो, समसामयिक घटनाओं की जानकारी से भी भरी हो एवं बालकों का विकास करने में सक्षम हो। अतः शिक्षा प्रक्रिया में गुणवत्ता लाने के लिए भी पाठ्यचर्या विकास की वर्तमान में आवश्यकता है।

2. **वैज्ञानिक एवं तकनीकी ज्ञान की प्राप्ति हेतु** –(To Achieve Scientific and Technical knowledge) पाठ्यचर्या विकास छात्रों के मस्तिष्क को नवीनतम विचारों से पूर्ण करने के लिए आवश्यक है। इसी के द्वारा छात्र नित्य विकसित होते वैज्ञानिक एवं तकनीकी ज्ञान को प्राप्त कर सकते हैं। पाठ्यचर्या विकास ही छात्रों को वैज्ञानिक आविष्कारों के लिए तैयार करता है। सम्पूर्ण राष्ट्र में व्यावसायिक तथा तकनीकी शिक्षा का विकास समाज तथा देश की आवश्यकता के सन्दर्भ में होना चाहिए।

3. **परिमार्जित ज्ञान की प्राप्ति हेतु For Attainment of Refind knowledge**-मानव स्वभाव से ही जिज्ञासु प्राणी होता है एवं विविध माध्यमों से वह ज्ञान प्राप्ति के प्रयास करता है। समय-समय पर छात्रों को भी परिष्कृत एवं परिमार्जित ज्ञान की आवश्यकता होती है जिसकी पूर्ति पाठ्यचर्या विकास के द्वारा की जा सकती है। समय के साथ हुए परिवर्तनों तथा बदलते युग के साथ परिवर्तित ज्ञान को भी बालकों तक पाठ्यचर्या के माध्यम से पहुंचा सकते हैं।

4. **वर्तमान समय की माँग की पूर्ति हेतु (To** meet the demand of present Time) - वर्तमान समय की प्रतिस्पर्धा के दौर में अपना अस्तित्व बनाए रखना एवं जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं को पूर्ण कर पाना सबसे दुष्कर कार्य है। इसके लिए व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाना होगा एवं समय के साथ अपने आपको व अपने ज्ञान को भी परिष्कृत करना होगा। पाठ्यचर्या विकास छात्रों को अत्यधिक परिष्कृत ज्ञान प्राप्त कराता है ताकि बालक शिक्षा प्राप्ति के पश्चात् अपने पैरों पर खड़े हो सके एवं अपने उत्तरदायित्वों का निर्वहन कर सकें।

5 **छात्रों की क्षमताओं के अनुरूप विकास हेतु (To develop According to the Abilities of the Student)** --परिवर्तित समय के अनुसार विज्ञान तथा तकनीकी ने अत्यन्त प्रगति कर ली है। प्रत्येक व्यक्ति समय के साथ चलना चाहता है। ऐसे में पाठ्यचर्या विकास ही एक ऐसा साधन है जो बालकों में बदलते समय के अनुरूप सामाजिक, नैतिक तथा वैज्ञानिक अभिरुचियाँ उत्पन्न कर सके। पाठ्यचर्या विकास न केवल छात्रों में वांछित अभिरुचियाँ व योग्यताएँ उत्पन्न करता है अपितु उन अभिरुचियों व योग्यताओं एवं क्षमताओं के अनुरूप उनका विकास भी करता है। अतः इस दृष्टिकोण से भी पाठ्यचर्या विकास की आवश्यकता है।

6. **बालकों के चरित्र निर्माण में सहायक (Helps in character building of the Student) -** पाठ्यचर्या की अवधारणा संकुचित न होकर व्यापक है। पाठ्यचर्या के अन्तर्गत पाठ्यविषय ही नहीं आते बल्कि पाठ्यचर्या में पाठ्य सहायक क्रियाओं और क्रियाकलाप भी सम्मिलित रहते है जिनके माध्यम से बालक में राष्ट्र प्रेम, समाजसेवा व अन्य सामाजिक गतिविधियों में सहभागिता की भावना को जागृत किया जाता है। इन सब क्रियाकलापों के द्वारा बालको के चरित्र निर्माण पर बल दिया जाता है और उन्हें एक आदर्श नागरिक के रूप में स्वय को विकसित करने का प्रोत्साहन मिलता है। पाठ्यतर पाठ्यचर्या के अन्तर्गत एन.सी.सी. (N.C.C.), रेड फॉस (Red Cross) एवं स्काउंटिंग इत्यादि आते है।

7. **शरीरिक एवं व्यक्तित्व विकास हेतु (For physical and personality development) -** शिक्षा का मूल उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास करना है। बालक के सर्वांगीण विकास से आशय बालक के मानसिक विकास एवं शारीरिक विकास के साथ-साथ उसके व्यक्तित्व का विकास करना भी है। पाठ्यचर्या के माध्यम से विद्यालयों का ध्यान इस पर केन्द्रित करने का प्रयत्न किया जाता है और इस बात का ध्यान रखा जाता है कि विद्यालय बालक के सर्वांगीण विकास की दिशा में उचित गतिविधियों का आयोजन करे इससे बालक मे शारीरिक विकास एवं व्यक्तित्व विकास सुनिश्चित होता है।

8. **पाठ्य पुस्तकों की रचना का आधार (The basis of the composition of the text Book)--** पाठ्य पुस्तकों का निर्माण पाठ्यचर्या पर ही आधारित होता है। पाठ्य पुस्तकों का मूल आधार पाठ्यचर्या ही होता है। पाठ्यचर्या का निर्धारण प्रत्येक कक्षा के लिए अलग-अलग होता है जो कि उस आयुवर्ग के बालकों के बौद्धिक स्तर को ध्यान में रखकर निर्धारित किया जाता है। इस प्रकार उपरोक्त विवेचन से पाठ्यचर्या की आवश्यकता स्वतः ही स्पष्ट हो जाती है। पाठ्यचर्या की सहायता से पाठ्य-वस्तु का निर्माण किया जाता है।

9. **छात्रों के व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन हेतु (For** Expected Change in the behavior of Student)-----
छात्रों के व्यवहार में वांछित परिवर्तन लाने के लिए पाठ्यचर्या का विकास किया जाता है। वस्तुतः पाठ्यचर्या विकास की प्रक्रिया में अधिगम अवसरों के नियोजन द्वारा छात्रों के व्यवहार में विशिष्ट परिवर्तन लाया जा सकता है एवं परीक्षण द्वारा यह जानने का प्रयास किया जाता है कि अपेक्षित परिवर्तन किस सीमा तक हुआ